खीरे

निकोलाई नोसोव

चित्र: इवान सेम्योनोव

हिंदी: अरविन्द गुप्ता

खीरे

निकोलाई नोसोव

चित्र: इवान सेम्योनोव

हिंदी: अरविन्द गुप्ता

एक दिन पावलिक अपने दोस्त कोल्या को मछली पकड़ने ले गया. लेकिन उनकी किस्मत एकदम ख़राब निकली. पूरे दिन मछलियों ने कांटे पर मुंह तक नहीं मारा. लेकिन घर वापस आते समय वे सामूहिक सब्जी वाले खेत में गए और उन्होंने खीरे तोड़कर अपनी जेबें भर लीं. चौकीदार ने उन्हें देख लिया और सीटी बजाई. लेकिन लड़के जितनी तेजी से भाग सकते थे भागे और वहां से चंपत हो गए. जैसे-जैसे वे आगे बढ़े पावलिक को यह ख्याल आया कि घर पहुंचने पर खीरे चुराने के कारण उसे डांट पड़ेगी, इसलिए उसने अपने खीरे भी कोल्या को दे दिए.

"देखो मैं आपके लिए कितने खीरे लाया हूँ!" सामने का दरवाज़ा खोलते ही कोल्या चिल्लाया.

माँ ने ऊपर देखा - कोल्या की जेबें और कमीज़ उभरी हुई थीं
और उसके हाथों में दो खीरे थे जो कपड़ों में फिट होने के लिए बहुत बड़े थे.

"तुम्हें वे खीरे कहाँ से मिले," माँ ने पूछा.

"बगीचे में से."

"कौन से बगीचे से?"

"नदी के पास स्थित सब्ज़ियों के खेत से."

"वहाँ से खीरे तोड़ने की इजाजत तुम्हें किसने दी?"

"किसी ने भी नहीं कहा, मैंने खुद वो खीरे तोड़े."

"तुम्हारा मतलब है कि तुमने वो खीरे चुराए?"

"नहीं. मैं बस उन्हें लेकर आया. पावलिक ने भी कुछ खीरे लिए. फिर, मैंने भी लिए." फिर उसने अपनी जेब से खीरे निकालना शुरू किए.

"रुको! वो मत करो," उसकी माँ ने कहा.

"क्यों नहीं?"
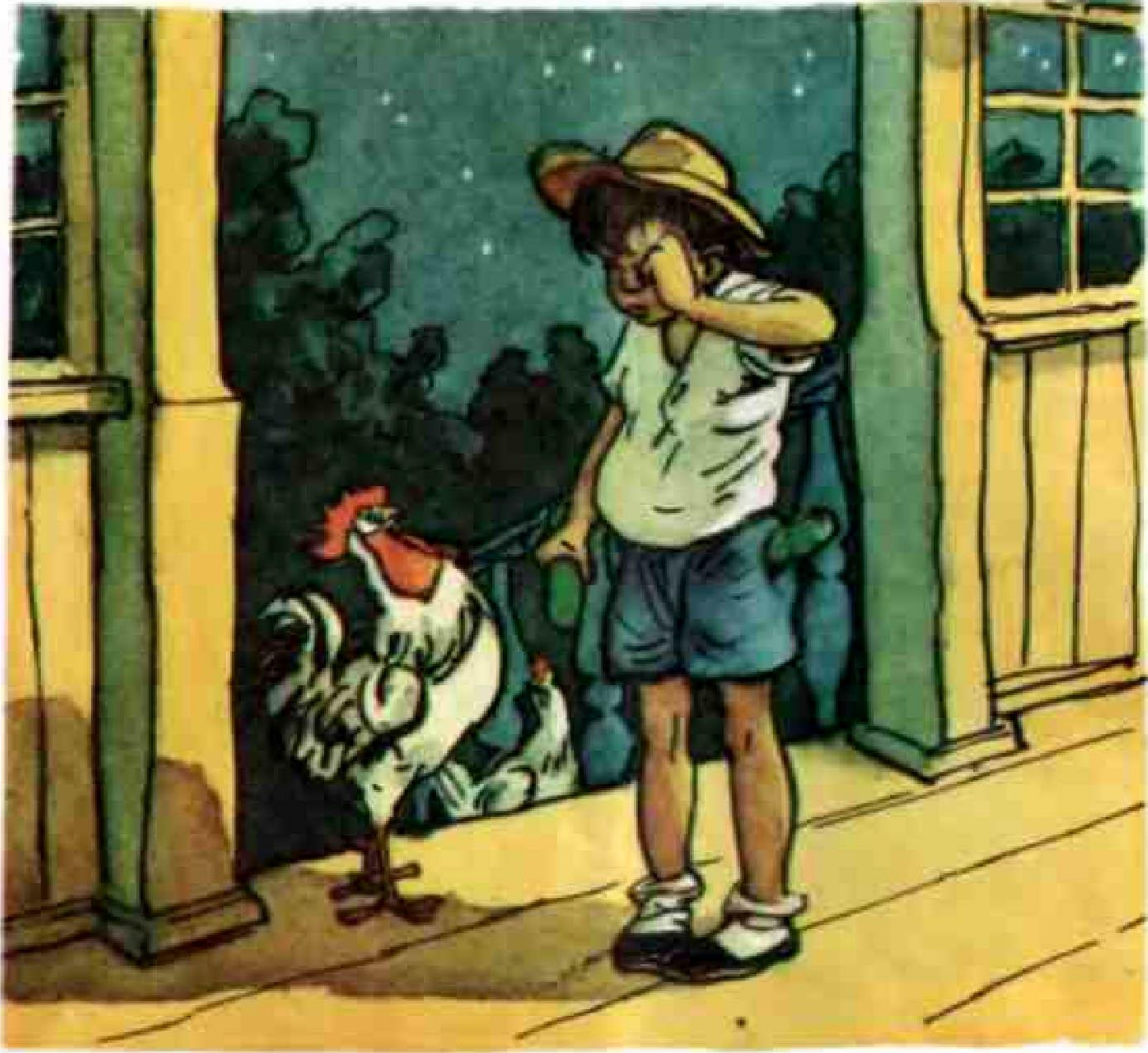
"तुम खीरे तुरंत वापस करके आओ."

"क्यों? वे बेलों पर उगे थे जअब मैंने उन्हें तोड़ा. अब वो वैसे भी दुबारा नहीं उगेंगे."

"कोई बात नहीं. तुम उन्हें वापस ले जाओ और उन्हें वहीं रखकर आओ जहाँ से तुमने उन्हें तोड़ा था."

"ठीक है, मैं खीरे बाहर जाकर फेंक देता हूँ."

"अरे नहीं, तुम ऐसा नहीं करोगे! तुमने वो खीरे नहीं लगाए. तुमने उन्हें पानी नहीं दिया. और इसलिए, तुम्हें उन्हें बाहर फेंकने का भी कोई अधिकार नहीं है."

"लेकिन चौकीदार वहाँ था. उसने हमें देखकर सीटी बजाई लेकिन हम भाग निकले."

"और अगर उसने तुम्हें पकड़ लिया होता तो क्या होता?"

"वो वैसा नहीं कर सकता था. वो बूढ़ा तेज़ नहीं दौड़ सकता था."

"तुम्हें शर्म आनी चाहिए. चौकीदार उन खीरों के लिए ज़िम्मेदार है. अगर किसी को पता चला कि खीरे गायब हैं, तो वे उसे चौकीदार की गलती बताएंगे."

माँ ने खीरे वापस कोल्या की जेब में भर दिए.

“मैं नहीं जाऊँगा!” कोल्या चिल्लाया. “उसके पास बन्दूक है. वो मुझे गोली मार देगा!”

"तुम उसी के हकदार हो. मैं नहीं चाहती कि मेरा बेटा एक चोर बने?"

"तुम मेरे साथ आओ, माँ! मुझे अकेले वापस जाने में डर लग रहा है."
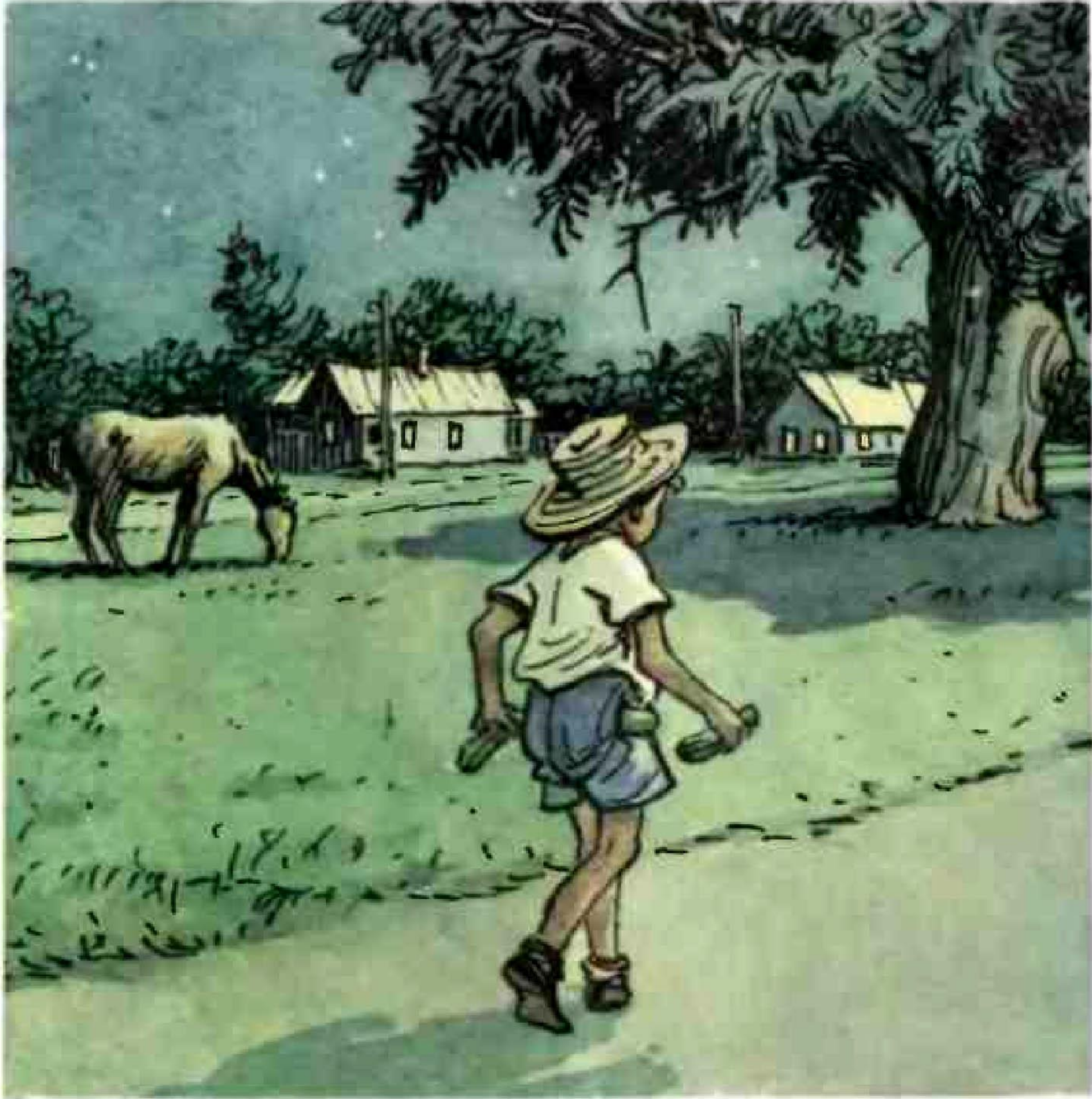
"जब तुमने उन्हें चुराया था तो तुम्हें बिल्कुल डर नहीं लगा था, क्यों है ना?" माँ ने कहा. फिर माँ ने दो सबसे बड़े खीरे कोल्या के हाथों में थमाए और उसे घर के बाहर भेज दिया.

"जाओ, खीरे वापस करके जाओ," माँ ने कहा.

कोल्या गाँव की सड़क पर पैदल चलने लगा.

"मैं खीरों को एक गड्ढे में फेंक दूँगा और कहूँगा कि मैंने वो वापस कर दिए," उसने खुद से कहा और फिर उसने चारों ओर देखा. "नहीं, इससे पहले कि कोई मुझे उन्हें गड्ढे में फेंकते हुए देखे और चौकीदार मुसीबत में पड़े, बेहतर होगा कि मैं उन खीरों को वापस कर दूं."

सड़क पर चलते हुए कोल्या अपने आप से बड़बड़ाता रहा, "पावलिक मेरी तरह परेशानी में नहीं फंसा. उसने मुझे अपने खीरे थमा दिए, और अब वो अपने घर पर है, और उससे कोई नाराज भी नहीं है."

कोल्या गाँव की सड़क के अंत तक पहुँचा और फिर मैदान की ओर बढ़ा. वो कभी भी इतनी देर शाम को अकेले बाहर नहीं गया था, और इससे उसे कुछ बेचैनी महसूस हुई. आख़िरकार, वो नदी के किनारे खीरों के खेत में पहुँचा.

खीरों के खेत के किनारे एक छोटी सी झोपड़ी थी. वहीं पर चौकीदार था. कोल्या झोपड़ी के बाहर खड़ा हो गया और ज़ोर-ज़ोर से सांस लेने लगा. चौकीदार ने उसे सुन लिया.

"क्यों बात क्या बात?" चौकीदार ने बाहर आते हुए पूछा.

"मैं खीरे वापस लेकर आया हूं."

"कौन से खीरे?"

"जो पावलिक और मैंने तोड़े थे. माँ ने कहा कि मुझे वो वापस करना चाहिए."

"अच्छा, तो ऐसा है," बूढ़े चौकीदार ने बड़े आश्चर्य से कहा. "तो, तुम ही वे लड़के थे जिन पर मैंने सीटी बजाई थी. मुझे नहीं पता था कि तुम बच निकलोगे. लेकिन तुमने जो कुछ भी किया वो बिल्कुल भी अच्छा नहीं था."

"पावलिक ने जब कुछ खीरे लिए, तो फिर मैंने भी उसकी देखा-देखी कुछ ले लिए. और बाद में पावलिक ने मुझे अपने सारे खीरे भी दे दिए."

"देखो पावलिक की बात छोड़ दो. लेकिन तुम सच्चाई जानने के लिए अब काफी बड़े हो. देखो, अगली फिर कभी ऐसा मत करना. अच्छा, अब खीरे मुझे दे दो और तुम अपने घर भाग जाओ."

कोल्या ने अपनी जेबों और शर्ट से खीरे निकाले और उन्हें एक लाइन में रख दिया.

"बस इतने ही?" चौकीदार ने कहा.

"नहीं. एक और खीरा था."

"अच्छा? वो कहाँ है?"

"उसे मैंने खा लिया. अच्छा अब आप मेरे साथ क्या करेंगे?"

"कुछ नहीं. जब तुमने खीरा खा लिया है तो फिर उसका क्या फ़ायदा?"

"क्या उससे आप परेशानी में तो नहीं पड़ेंगे?"

"एक खीरा कम होने से कोई फर्क नहीं पड़ेगा, लेकिन अगर तुम ये सब खीरे वापस नहीं लाते, तो मैं निश्चित रूप से मुसीबत में फंस जाता."

फिर कोल्या मुड़ा और भागने लगा. अचानक वो रुका और चिल्लाया, "मैं आपसे कुछ पूछना भूल गया!"

"क्या?"

"जो खीरा मैंने खाया उसका क्या? क्या मैंने उसे चुराया था, या नहीं?"

"देखो," चौकीदार ने कहा. "यह बहुत कठिन प्रश्न है. ठीक है, मान लो कि तुमने उसे नहीं चुराया था."

"लेकिन फिर मैंने क्या किया था?"
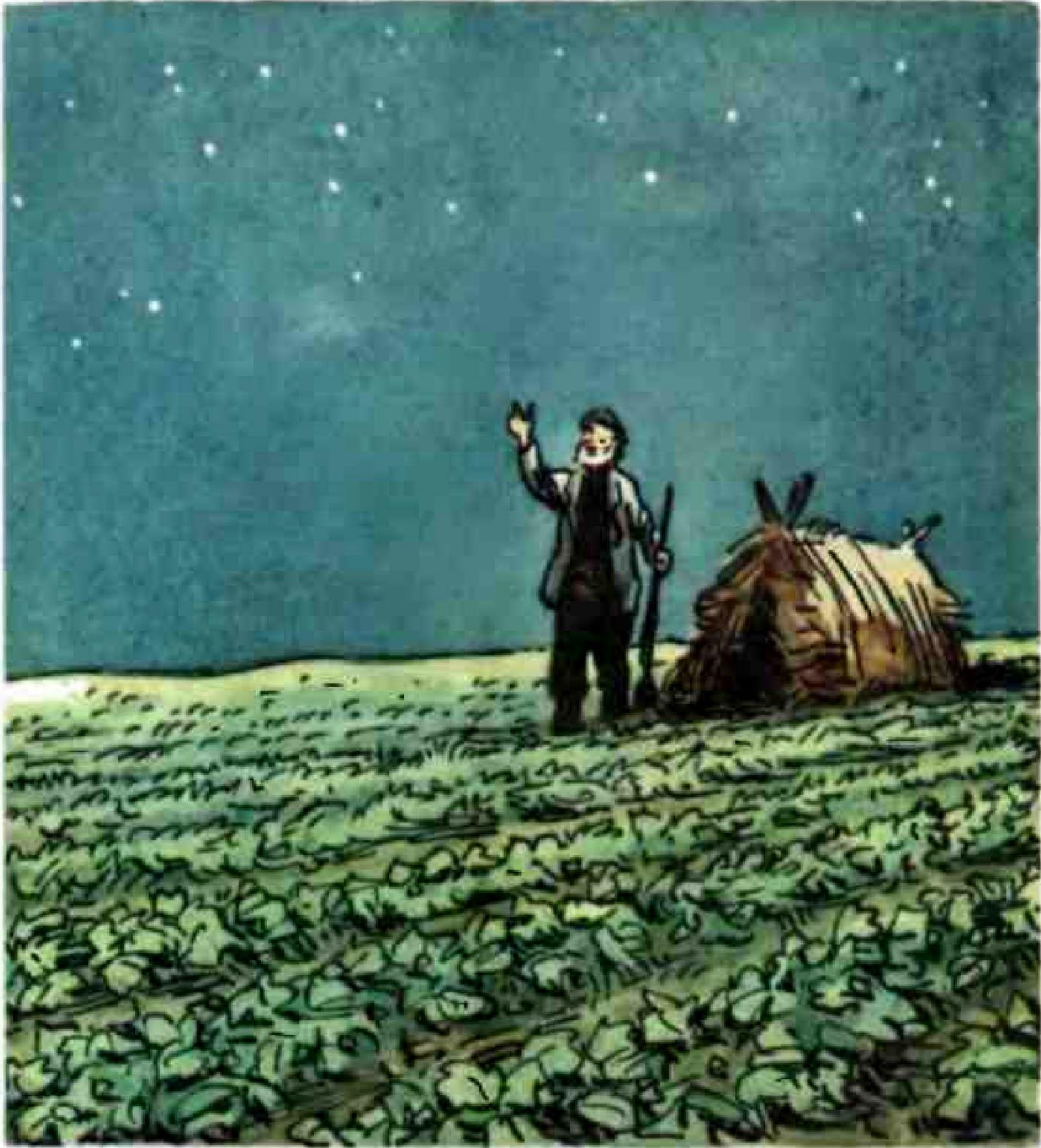
"ऐसा मान लो कि वो मेरी ओर से तुम्हें एक उपहार था."

"धन्यवाद! मैं अब घर जा रहा हूँ, गुड-नाईट."

"गुड-नाईट."

कोल्या पूरे मैदान और छोटे पुल पर दौड़कर भागा. गांव की सड़क पर पहुंचने के बाद वो रुका और फिर उसने घर का बाकी रास्ता धीरे-धीरे तय किया. अब उसे अंदर से बहुत अच्छा महसूस हो रहा था.

अंत